शोध मंथन Vol. XI No.I Jan.-Mar. 2020 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 7.760 (SJIF)

भारत के मुस्लिम समाज का बदलता शैक्षिक एवं व्यावसायिक परिदृश्य, उत्तराखण्ड राज्य के जसपुर नगर के विशेष संदर्भ में

डा0 सिराज अहमद *, डा0 जी0सी0 बेंजवाल **,
*असि0 प्रोफे0, भूगोल विभाग, राजकीय महाविद्यालय चौखुटिया, अल्मोड़ा
**एसो0 प्रोफे0, अर्थशास्त्र विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ऋषिकेश
Email: amansirajahmad@gmail.com

सारांश

वर्तमान समय मे चूँकि शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के मात्र एक पक्ष का विकास नहीं वरन् सम्पूर्ण विकास है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु समाज को ऐसी शिक्षा संस्थाओं की आवश्यकता है। वर्तमान समय में समाज के परिप्रेक्ष्य में उच्च से उच्चतर शिक्षा प्राप्त करना भारत के प्रत्येक व्यक्ति का मूल अधिकार है। अतः समस्या यह उत्पन्न हुई है कि इस उद्देश्य की पूर्ति किस प्रकार हो। इसके लिए शिक्षा के उच्च स्तर पर कार्यरत व्यक्तियों व सरकारों द्वारा अनेक बिन्दुओं पर विचार करके ऐसी स्वायत्शासी संस्थाओं का उद्भव करना होगा। यह एक शाश्वत तथ्य है कि परिवर्तन प्रकृति का नियम है। इसलिए मानव प्रत्येक समय परिवर्तन करता रहता है। उसकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति के साथ–साथ उसकी शैक्षिक स्थिति में भी परिवर्तन होता रहता है। इसी तथ्य के दृष्टिगत मुस्लिमों की भी सामाजिक–आर्थिक एवं शैक्षिक स्थितियों में भी परिवर्तन दिखाई दे रहा है।

सामान्यतः ऐसा विश्वास किया जाता रहा है कि भारतीय मुसलमान भारतीय समाज में हो रहे आधुनिक परिवर्तनों के साथ–साथ स्वयं में परिवर्तन करने में असमर्थ रहे हैं, लेकिन मुस्लिमों की धार्मिक प्रमुख प्रकृति के बावजूद हम देखते हैं कि मुसलमानों पर बहुआयामी वैश्विक परिवर्तनो के प्रभाव के कारण भारत में हाल के दो दशकों में उनकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति और विशेषतया उनकी शिक्षा में एक बड़ा बदलाव आया है।

मुख्य शब्दः *पारम्परिक शिक्षा, व्यावसायिक पाठ्यक्रम, महिला शिक्षा, विकासवादी शिक्षा, 'अपव्यय एवं अवरोधन'*

प्रस्तावना

वर्तमान समय में हम भारतीय मुसलमानों के दृष्टिकोण और सामान्य जागृति में एक बड़ा परिवर्तन देखते हैं, विशेष रूप से भारतीय मुस्लिम महिलाएँ जो अब तक केवल पर्दे एवं चहारदीवारी में कैद रहने तक सीमित मानी जाती थी, उनकी शैक्षिक एवं व्यावसायिक स्थिति में एक बड़ा परिवर्तन आया है। जब हम मुस्लिम महिलाओं पर अपना ध्यान केंद्रित करते थे तो एक पिछड़ापन उनकी सामाजिक स्थिति में दिखाई देता था। वे अपनी सामाजिक एवं शैक्षिक

स्थिति में बदलाव के लिए उत्सुक नही दिखाई देती थी। वे केवल अपनी स्थिति से समझौता ही किये रहती थी। कई धार्मिक, सांस्कृतिक बेड़ियाँ उनकी उन्नति के मार्ग में बाधा डाले रहती थी। लेकिन हम देखते हैं कि उनकी प्रवृत्ति और समस्त दशाओं में एक धीमा परिवर्तन देखने को मिलता है जैसे कि उनके परिवार में उनकी दशा एवं सामाजिक–आर्थिक संरचना में।

गत दो दशकों में देखने को मिलता है कि महिलाओं की उच्च शिक्षा के प्रति उत्सुकता एवं जागृति तथा परिवार के सदस्यों की उनकी शिक्षा के प्रति सकारात्मक भूमिका के चलते वे उच्च शिक्षा के साथ–साथ विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश ले रही हैं। तदोपरान्त विभिन्न स्वरोजगारों एवं नौकरियों में अपना योगदान दे रही हैं। वे चहारदीवारी की कैद को तोड़कर समाज के अन्य वर्गों की महिलाओं की भाँति विभिन्न नौकरियाँ कर रही हैं। महिला सशक्तीकरण का सपना जहाँ मुस्लिम महिलाओं के कारण पूर्णतया पूर्ण नहीं हो पाता था, अब उसकी आशा जगने लगी है कि भारतीय समाज पूर्ण रूप से महिला सशक्तीकरण करने में सफल होगा।

समस्या कथन

भारत के मुस्लिमों के आँकड़ों जैसे उनकी जनसंख्या का आकार एवं वितरण, उनकी आय, स्वास्थय, शिक्षा, निर्धनता, जीवन स्तर, इत्यादि का सावधानीपूर्वक और वैज्ञानिक खोजबीन करने से पता चलता है कि उनकी सामाजिक–आर्थिक दशा अत्यन्त खराब है। मुस्लिमों के सामाजिक–आर्थिक उत्थान का एकमात्र और प्रभावी उपाय उनका शैक्षिक सुधार करना है, जिससे वे नौकरियों, व्यवसायों तथा अन्य कार्यों को कर सके। भारतीय मुसलमानों की पारंपरिक शिक्षा में आमूल–चूल परिवर्तन की आवश्यकता है।

अध्ययन की आवश्यकता :

उपरोक्त तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए वर्तमान शोध की अत्यन्त महत्ता है। शोध क्षेत्र जसपुर में भी मुस्लिमों की जनसंख्या सम्पूर्ण नगर की जनसंख्या का लगभग 50 प्रतिशत है। किन्तु वे आज भी पिछड़ी दशा में जी रहे है। अधिकांश लोग अशिक्षित एवं अल्प शिक्षित है। हालांकि लगभग दो दशकों से दिखाई पड़ता है कि उनकी पारम्परिक शिक्षा का स्थान आधुनिक शिक्षा लेती जा रही है। फलस्वरूप इस समुदाय के लोग काफी संख्या में नौकरियों विशेषकर सरकारी नौकरियों में आये हैं। अतः उनका अध्ययन आवश्यक था, जिससे उनकी स्थिति एवं आवश्यकताओं को समझ कर उनके विकास के लिए सुझाव प्रस्तावित किये जा सकें। साथ ही उनके लिए नवीन योजनाएं निर्मित की जा सकें। जसपुर के मुस्लिमों के विकास हेतु उनकी आशाओं, प्रत्याशाओं, शिक्षा, व्यवसाय परिवर्तन, परिवार की महिलाओं की स्वतंत्रता, उनकी परिवार में भूमिका, सहयोग, उनके भौतिक संग्रहण, धार्मिक कट्टरता, विवाह के लिए आयु निर्धारण, बालक–बालिका की शिक्षा कहाँ तक, स्वच्छता, परिवार नियोजन के प्रति रूख इत्यादि के बारे में अध्ययन आवश्यक है। मुस्लिमों के परम्परागत हस्तशिल्प व्यवसायों को व्यवसायिक शिक्षा से सम्बद्ध करना फलदायक होगा या नहीं। यह भी विचार करना होगा कि क्या मुस्लिम अपनी परम्परागत शिक्षा के कारण अच्छे व्यवसायों से वंचित हैं? मुस्लिम छात्रों में अपव्यय एवं अवरोधन की समस्या को रोकने के सुझाव भी आवश्यक हैं। मुस्लिमों का नवीन एवं आधुनिक

शिक्षा के प्रति सकारात्मक दर्षष्टिकोण अथवा उदासीनता का आकलन भी आवश्यक है। नई शिक्षा से उनके रहन सहन में आये हुए बदलावों को भी देखा गया है। अन्य धर्मों, भाषा एवं साहित्य के प्रति मुस्लिम समाज के रूख में आये हुए परिवर्तन का भी अध्ययन आवश्यक है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन मुस्लिमों की शिक्षा एवं व्यवसायगत दशाओं के बदलाव का अध्ययन है, विशेष रूप से उत्तराखण्ड राज्य के जसपुर नगर की मुस्लिम जनसंख्या की शैक्षिक स्थिति एवं स्तर में आये बड़े परिवर्तन तथा विशेषकर महिलाओं की शिक्षा तथा उनकी सामाजिक स्थिति में आये हुए परिवर्तनों का अध्ययन है।

अतः प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं।

1– मुस्लिम समाज में आधुनिक शिक्षा की स्थिति तथा पारम्परिक शिक्षा में आये हुए बदलावों का अध्ययन।

2– जसपुर नगर के मुस्लिम समाज की धार्मिक शिक्षा के बदलते स्वरूप का अध्ययन।

3– महिला शिक्षा में आये सकारात्मक बदलावों का अध्ययन।

4– धार्मिक शिक्षा में व्यवसायिक शिक्षा के महत्व एवं उपयोगिता का अध्ययन।

5– क्या मुस्लिम अपनी परम्परागत शिक्षा के कारण अच्छे व्यवसायों से वंचित हैं?

6– मुस्लिम छात्रों के 'अपव्यय' एवं 'अवरोधन' का अध्ययन एवं उसे रोकने के सुझाव।

7– उनकी शैक्षिक तथा व्यवसायगत दशाओं के सुधार के लिए नवीन नीतियों की खोज।

8– मुस्लिमों का आधुनिक एवं विकासवादी (बहुआयामी) शिक्षा के प्रति रूझान, सकारात्मकता अथवा उदासीनता का आंकलन। उनकी मनोवृत्तियों, सोचों एवं दृष्टिकोणों तथा व्यवहार में आये बदलावों का अध्ययन।

9– शिक्षा में आये बदलावों के उपरान्त उनके समाजिक एवं राजनैतिक जीवन एवं रहन–सहन में आये बदलावों का अध्ययन।

10– नयी शिक्षा के फलस्वरूप मुस्लिम समाज की व्यावसायिक संरचना एवं दिशा में परिवर्तन का अध्ययन।

11– अन्य धर्मों, भाषाओं एवं साहित्य के प्रति मुस्लिम समाज के रूख का अध्ययन।

12– मुस्लिमों के लिए शिक्षा के विकास के प्रतिमान एवं विकास के सुझाव एवं नीतियाँ।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत शोध के लिए उत्तराखण्ड राज्य के जसपुर नगर का चयन किया गया है, जिसका कारण यह है कि जसपुर नगर एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ मुस्लिम समाज बहुत अधिक संख्या में रहता हैं। इसके अतिरिक्त जसपुर नगर का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि यहाँ के मुस्लिमों ने न केवल धार्मिक शिक्षा (परम्परागत) प्राप्त की है, और उसमें पारंगतता हासिल की है, अपितु आधुनिक उच्च शिक्षा एवं विभिन्न व्यवसायिक शिक्षा के क्षेत्रों में अग्रसर होकर विभिन्न बड़ी–बड़ी नौकरियों अर्थात् उच्च पदों पर आसीन हुए हैं, यथा उपजिलाधिकारी जैसे प्रशासनिक

पदों से लेकर चिकित्सक, वकील और शिक्षक जैसे सफेदपोश व्यवसायों मे प्रवेश किया है। इस नगर में न केवल पुरूषों ने इस प्रकार की प्रवीणता हासिल की है बल्कि महिलाओं ने भी शिक्षा के क्षेत्र में विकास किया है। महिलाएं भी न केवल प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा ग्रहण करने तक सीमित हैं, बल्कि वे भी उच्च शिक्षा के साथ–साथ विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों यथा बी0एड0, एल0टी0, मेडिकल पाठ्यक्रमों, इंजीनियरिंग, आई0 टी0 आई0 एवं पॉलीटेक्निक जैसे पाठ्यक्रमों की शिक्षा ग्रहण कर रही हैं।

यह भी देखा गया है कि आधुनिक शिक्षा के विकास के फलस्वरूप इस नगर के मुस्लिम समाज के लोगो की सोच तथा दृष्टिकोणों एवं व्यवहारों में बदलाव देखने को मिला है। उन्होंने विभिन्न रूढ़िवादी विचारों तथा अभ्यासों को तिरष्कृत किया है। उनके विवाह के क्षेत्र में भी परिवर्तन देखने को मिलते हैं। जहाँ जसपुर नगर के मुस्लिम समाज के लोग अपने बच्चों विशेषकर पुत्रियों के विवाह जो कि पहले 13–14 वर्ष में कर दिया करते थे, अब औसतन 22–24 वर्ष में कर रहे हैं। कुछ लोग इससे भी अधिक आयु में उनका विवाह करते हैं। जसपुर नगर के मुस्लिमों का दृष्टिकोण पहले नौकरियों के प्रति उदासीन था। वे केवल स्वरोजगार करना पसन्द करते थे। वर्तमान में वे नौकरियों के प्रति उत्साहित हैं तथा अब नौकरियों को एक अच्छा तथा उच्च सामाजिक स्थिति वाला पेशा मानने लगे हैं।

इस नगर में मुस्लिमों के अलग–अलग वर्ग होने के बावजूद शिक्षा का समान विकास दिखाई देता है। मदरसों में भी आधुनिक शिक्षा का प्रवेश हो गया है तथा कम्प्यूटर शिक्षा जैसी नवीन तकनीकों का भी प्रवेश हो गया है। अंग्रेजी शिक्षा बोलचाल एवं सामान्य प्रचलन में दिखाई देने लगी है।

अतः इस नगर के मुस्लिम समुदाय की शिक्षा का अध्ययन एक अभिनव प्रयोग होने के साथ–साथ काफी रोचक भी रहा।

शोध प्रविधि

इस अध्ययन में प्रश्नावली, साक्षात्कार, आनुभविक, अवलोकन तथा निरीक्षण विधियों का प्रयोग किया गया। विभिन्न मदरसों, उनके मौलवियों (अध्यापकों) के साथ–2 क्षेत्र के विभिन्न स्तर की शैक्षणिक संस्थाओं के छात्र–छात्राओं की समस्याओं तथा आकाक्षाँओं का भी अवलोकन तथा निरीक्षण किया गया। जिससे उनको समस्त रूप में जाना जा सका।

साहित्य का पुनरावलोकन

मुस्लिम समाज की शिक्षा को देखने से ज्ञात होता है कि उनकी धार्मिक शिक्षा से आधुनिक शिक्षा की ओर तेजी से परिवर्तन होने के कारण मुस्लिम समाज के सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक ढाँचे में तीव्र गति से बदलाव आयें हैं। उनकी धार्मिक एकाग्रता और कट्टरवादी सोच में भी तीव्र बदलाव आयें हैं, किन्तु इस ओर किसी का ध्यान नही गया है। अभी तक केवल कुछ विद्वानो ने उनके लिए स्थापित शिक्षण संस्थाओं के बारे में वर्णन करने तथा उनकी धार्मिक (दीनी) शिक्षा जो कि एक परम्परागत व धर्म केन्द्रित शिक्षा मानी जाती है, के अध्ययन व खोजों पर ही अपना ध्यान केन्द्रित रखा है, किन्तु उनके बदलाव परिदृश्य की ओर नहीं देखा

गया है। कुछ कमेटी रिर्पोटे जैसे 'सच्चर कमेटी' की रिपोर्ट में उनकी संख्या तथा उनकी शिक्षण संस्थाओं तथा विभिन्न संचालित पाठ्यक्रमों एवं उनके लिए आरक्षण प्रावधानों को ही देखा गया है। किन्तु नई शिक्षा ग्रहण करने के उपरान्त उनकी मनोवृत्तियों, व्यवहारों, सोचों तथा उनके आर्थिक एवं राजनैतिक परिदृश्य तथा चेतना का कोई मूल्यांकन नहीं किया गया है। एक आदिमकालीन धर्म केन्द्रित शिक्षा से नये आयाम वाली आधुनिक, व्यवसायिक एवं तकनीकी शिक्षा को अपनाने के बाद के बदलावों पर विचार नहीं किया गया।

अतः प्रस्तुत अध्ययन में उपरोक्त पक्षों पर विचार करने के साथ–साथ महिला शिक्षा के उत्थान के बदलते परिवेश पर भी विचार किया गया। महिला शिक्षा, जो कि वर्तमान तक एक अंधकार के युग में थी, उसके विकास के बाद महिलाओं की सामाजिक तथा सांस्कृतिक एवं आर्थिक दिशा में क्या बदलाव आये हैं, का अध्ययन प्रस्तुत शोध में करने का प्रयास किया गया है। इस सन्दर्भ में विदेशी लेखकों में डेविड अर्नोल्ड (2004), तथा हार्टमेट स्कार्फ (2006) एवं भारतीय लेखकों में कुमार दीपक (2003, 1984), इत्यादि के कार्य प्रमुख हैं। तथापि इस विषय पर और अधिक मंथन की आवश्यकता थी। अतः वर्तमान अध्ययन इस समाज की दशा, समस्याओं एवं आकांक्षाओं को समझने एवं नीतियाँ बनाने के लिए कारगर साबित होगा।

सर्वेक्षण रिर्पोट

जसपुर के मुस्लिम समाज के 100 उत्तरदाताओं से प्रश्नावली के आधार पर प्रश्न करके साक्षात्कार किया गया। उत्तरदाताओं से उनके सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, पारिवारिक तथा धार्मिक जीवन से सम्बन्धित प्रश्न किये गये। इसमें उनसे उनकी संतानों के जीवन के बारे में, आशाओं, प्रत्याशाओं, परिवार की महिलाओं की स्वतंत्रता, भूमिका, सहयोग आदि के बारे में भी प्रश्न किये गये। उनके परिवार के सदस्यों, भौतिक संग्रहण, आयु, लिंग, वैवाहिक स्थिति, व्यवसाय, शिक्षा स्तर, परिवार के कार्य स्वरूप, धार्मिक कट्टरता, विवाह के लिए आयु निर्धारण, बालक–बालिका की शिक्षा कहाँ तक, बालकों के भविष्य में व्यवसाय तथा नौकरी के प्रति उनकी सोच। मुखिया के एक पीढ़ी पूर्व के व्यवसाय का भी पता लगाया गया। व्यवसाय परिवर्तन व इसके कारणों का भी पता लगाया गया। उनके स्वास्थ्य व स्वच्छता तथा परिवार नियोजन के प्रति रूख इत्यादि का पता लगाया गया। शिक्षा में आये परिवर्तन के कारणों को भी जानने का प्रयास किया गया। कुछ प्रश्न उनके भू–स्वामित्व के बारे में भी पूछे गये। उत्तरदाताओं को दृष्टिकोणों, रूचियों, अभिरूचियों तथा व्यवस्थाओं के बारे में अपने वक्तव्य देने थे।

उत्तरदाता कुछ प्रश्नों के उत्तर देने मे संकोच भी करते दिखे, विशेष रूप से परिवार नियोजन तथा आय से सम्बन्धित प्रश्नों में। विभिन्न समस्याओं पर उनके व्यक्तिगत विचारों व सोचों (दृष्टिकोणों) को चिन्हित करने का प्रयास किया गया, न कि सामूहिक व संगठित जातीय विचारों व सोचों को।

जसपुर के मुस्लिम समाज की शैक्षिक स्थिति

प्रत्येक समाज के आर्थिक विकास में शैक्षिक स्थिति की भूमिका उल्लेखनीय होती है। क्योंकि शैक्षिक विकास ही आर्थिक विकास के लिए आवश्यक ज्ञान एवं कुशलता प्रदान करता

है। शिक्षा एक ऐसा कारक है जो कि सामाजिक संगठन और व्यावसायिक संरचना की प्रकृति का निर्धारण करता है। शिक्षा किसी भी जाति के सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक विकास के लिए आवश्यक अंग है। जितनी अधिक जनसंख्या शिक्षित होगी उतना ही वहाँ का सामाजिक– आर्थिक विकास होगा। शिक्षा ही आधुनिकीकरण की प्रक्रिया का महत्वपूर्ण चरण है।

जसपुर के मुस्लिमों में परम्परागत रूप से शिक्षा का अभाव रहा है। जिस कारण स्वतंत्रता के 72 वर्षों के पश्चात् भी यह समाज न तो स्वयं को पर्याप्त रूप से परम्पराओं से मुक्त कर सका है और न ही इनका अपेक्षित आर्थिक विकास हो पाया है। स्कूलों की शिक्षा का माध्यम अलग होने के कारण भी उनकी शिक्षा में कुछ समस्याएं आई हैं। इसलिए आवश्यक है कि मुस्लिम समाज के बालकों को प्राथमिक स्तर पर उनकी भाषा के माध्यम से ही पढ़ाया जाये तथा पाठ्यक्रम में उनके लोक साहित्य का भी समावेश हो जिससे वे अपनी संस्कृति से भी वंचित न हों। शिक्षा के अन्य माध्यमों के कारण उनका बौद्धिक विकास रूका न रहे।

वर्तमान समय में शिक्षा के विकास ने जसपुर के मुस्लिमों की सामाजिक आदतों एवं व्यवहारों में काफी परिवर्तन किया है। आधुनिक शिक्षा के कारण जसपुर के मुस्लिमों में काफी परिवर्तन आये हैं। उनकी साक्षरता बढ़ी है। शिक्षित होकर उनके बच्चे विभिन्न नौकरियों में भी आये हैं, विशेष रूप से सरकारी नौकरियों में। इन्होंने अपने शैक्षिक ट्रस्ट और शिक्षण संस्थानों की स्थापना की है। महिला शिक्षा में काफी वृद्धि हुई है लेकिन अभी भी और अधिक विकास और खुली सोच की आवश्यकता है। आज भी इस और कुछ उदासीनता है तथा इसमें अपेक्षित सुधार की आवश्यकता है।

इस प्रकार देखने से पता चलता है कि प्राचीन समय में हाईस्कूल तथा इण्टर कक्षाओं तक अध्ययन भी काफी कम व्यक्ति कर पाते थे जबकि स्नातक, परास्नातक और व्यावसायिक कक्षाओं तक शिक्षा तो लगभग नगण्य ही थी।

प्राचीन समय में शिक्षा जसपुर के मुस्लिमों के लिए एक सपने के समान थी। उनके समाज का अवलोकन करने से पता चलता है कि महिला साक्षरता और कम थी। जिसका कारण उस समय 'स्त्री पर्दा' अधिक होने के कारण उनकी शिक्षा के प्रति उदासीनता होना था। वे अपने घर की महिलाओं को धार्मिक तथा पर्दे के दृष्टिकोण से 'धार्मिक शिक्षा' दिलाना अधिक उचित समझते थे। इसी कारण उनकी धार्मिक शिक्षा के प्रति जागरूकता अधिक थी।

यहाँ यह उल्लेख करना आवश्यक है कि मुस्लिम समाज के व्यक्तियों को धार्मिक शिक्षा मदरसों में दी जाती थी, जिसमे उन्हे केवल धर्म सम्बन्धी बातों एवं कुरान का पाठ कराया जाता था। वर्तमान समय में तो मदरसों में कुरान पाठ के साथ साथ गणित, विज्ञान, अंग्रेजी और अन्य विषयों का भी ज्ञान कराया जा रहा है। साथ ही कम्प्यूटर शिक्षा भी दी जा रही है। एक तथ्य यह भी है कि उस समय स्त्रियाँ अपने घरो मे ही अधिकांशतः मौलवियो द्वारा धार्मिक शिक्षा ग्रहण करती थी। स्त्रियां धार्मिक शिक्षा ग्रहण करने में केवल अपने पवित्र ग्रन्थ 'कुरान' को ही पढ़ती थी।

जसपुर के अधिकांश उत्तरदाताओं ने धार्मिक शिक्षा को प्राथमिकता दी है। केवल न्यून संख्या में ही इससे वंचित हैं। इससे ज्ञात होता है कि एक या दो पीढ़ी पूर्व धार्मिक शिक्षा को महत्व दिया जाता था। आधुनिक शिक्षा को धर्म के विरूद्ध समझा जाता था। वृद्ध उत्तरदाताओं ने बताया कि उस समय केवल दीनी (धार्मिक) शिक्षा को अनिवार्य माना जाता था। यदि कोई बालक–बालिका 'कुरान' का अध्ययन नहीं करता था तो उसे बुरा समझा जाता था।

हालाँकि कई लोग अपने समय में स्कूली शिक्षा को अधिक प्राप्त नहीं कर पायें, लेकिन वर्तमान समय में वे इसे अच्छा समझने लगे हैं और अपने पुत्र और पुत्रियों की शादी के लिए पढ़े–लिखे युवक एवं युवतियों को प्राथमिकता देने लगें हैं। जब ऐसे उत्तरदाताओं से इसका कारण पूछा गया तो उनका उत्तर था कि वर्तमान समय में किसी भी व्यवसाय के लिए शिक्षित होना आवश्यक है। वे कहते है कि यदि व्यक्ति व्यवसाय भी करता है तो उसे विभिन्न प्रकार की कागजी कार्यवाही करनी पड़ती है। विभिन्न कार्यालयो से सम्पर्क करना पड़ता है एवं विभिन्न बैंकों से भी सम्पर्क करना पड़ता है। अतः शिक्षित व्यक्ति ही इन सब कार्यों को करके बेहतर व्यवसाय कर सकता है तथा सफलता की सीढ़ी चढ़ सकता है। जबकि एक तिहाई के आसपास उत्तरदाताओं का कहना है कि शिक्षित होने या न होने से व्यवसाय पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। वे तर्क देते है कि कम शिक्षित व्यक्ति भी काफी अच्छे व्यवसायों को कर रहे हैं और काफी धनाड्य भी हैं।

अधिकांश उत्तरदाता वर्तमान समय में शिक्षा के महत्व को समझने लगे हैं। वे कहते हैं कि शिक्षित व्यक्ति में संस्कार, शिष्टता, सहयोग, धर्मनिरपेक्षता, राष्ट्रवादिता, वृहत सोच इत्यादि गुणों का विकास होता है। वे अपने बच्चों को भी अधिक अच्छी तरह से पढ़ा लिखा सकते हैं। उनका मानना है कि शिक्षित व्यक्ति सामान्य एवं व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद विभिन्न प्राईवेट व सरकारी नौकरियों में जा सकता है। शिक्षा आज के युग में एक अनिवार्य अंग है। शिक्षित व्यक्ति ही समाज की विभिन्न समस्याओं को हल कर सकते हैं। विभिन्न राजनैतिक संगठनों का निर्माण कर सकते हैं। वे अच्छी प्रकार से सरकारें चला सकते हैं। शिक्षित व्यक्ति अपनी रूढ़िवादिताओं को त्याग कर एवं संकीर्ण सोचों से आगे निकलकर एक स्वस्थ समाज का निर्माण कर सकते हैं। जबकि विपक्ष में उत्तर देने वाले उत्तरदाताओं का मत है कि यदि वे अपने बच्चों को शिक्षित कराने के लिए स्कूलों में भेजेगें तो वे उनके आर्थिक कार्यों में हाथ नहीं बटाँ पायेंगें। उनका सोचना है कि कई बार पूरी शिक्षा पूर्ण कराने के उपरान्त भी उनके बच्चों को नौकरियाँ नहीं मिल पाती और केवल उनकी शिक्षा पर मोटी रकम का निवेश हो जाता है। निर्धनता भी एक महत्वपूर्ण कारक है। स्कूलों का अध्ययन शुल्क अधिक होने के कारण तथा किताबों एवं कापियों की दर अधिक होने के कारण भी वे अपने बच्चों को नहीं पढ़ा पाते हैं। अनपढ़ व्यक्ति भी अपने बच्चों को शिक्षित कराना नहीं चाहते हैं। कुछ व्यक्ति अपने पुत्र को तो शिक्षित कराना चाहते हैं किन्तु पुत्री को शिक्षित कराने के अनिच्छुक रहते हैं।

आज भी काफी लोग पारम्परिक (दीनी) शिक्षा को सहेजे हुए हैं। हालाँकि उनकी धार्मिक शिक्षा में भी अच्छी शिक्षाएँ दी जाती हैं और धर्म के अनुसार उसका अध्ययन आवश्यक भी है।

किन्तु दीनी शिक्षा के साथ–साथ स्कूली शिक्षा की भी वर्तमान समय में महत्ता है।

ये चौकाने वाले तथ्य है कि आज के आधुनिक युग में भी जबकि व्यक्ति और समाज इतना विकास कर गया है। महिलाएँ विभिन्न क्षेत्रों में आगे आ गई हैं। वे दिन और रात के समय विभिन्न नौकरियों को सम्पादित कर रही हैं। एक बड़ा वर्ग अपनी पुत्रियों को शिक्षा दिलाना पसन्द नहीं करता है। और कुछ व्यक्ति केवल दीनी शिक्षा तक ही उनको सीमित करना चाहते हैं। इस अवरोध का एक बड़ा कारण आज भी 'पर्दा प्रथा' का होना है। वे स्कूल–कालेजों की शिक्षा के लिए उनको घर से बाहर भेजने के लिए उत्साही नहीं होते हैं। हालाँकि जब हमने जसपुर नगर के मुस्लिम समाज का निरीक्षण किया तो देखने से पता चलता है कि पिछले दो दशकों में महिलाओं की शिक्षा में वृद्धि हुई है। वे आधुनिक शिक्षा ले रही हैं तथा विभिन्न सरकारी नौकरियों को भी कर रही हैं। उनके माता–पिता उनकों घर से 200–300 किमी0 दूर रहकर नौकरियों में जाने को सहमति दे रहे हैं। यह एक सकारात्मक तथ्य है। पुलिस जैसी नौकरियों में भी उनका पदार्पण हुआ है, जो कि एक अनछुआ क्षेत्र माना जाता था, विशेषकर पर्दे में रहने वाले मुस्लिम समाज के लिए, तथा विशेषकर बालिकाओं के लिए।

अधिकांश उत्तरदाता बालिकाओं के लिए प्राइमरी शिक्षा को पर्याप्त मानते हैं जबकि कुछ ही उत्तरदाता अपनी पुत्री को हाईस्कूल/इण्टर तक की शिक्षा दिलाने के पक्षधर हैं। जबकि स्नातक एवं स्नातकोत्तर एवं व्यावसायिक शिक्षा दिलाने वाले उत्तरदाताओं की संख्या नगण्य ही रह जाती है। अधिकांश उत्तरदाता अपने पुत्र को हाईस्कूल/इण्टर तक शिक्षा दिलाना चाहते हैं। कुछ उत्तरदाता अपने पुत्र को स्नातक की शिक्षा दिलाना चाहते हैं। जबकि कम ही उत्तरदाता अपने पुत्र को स्नातकोत्तर एवं विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की शिक्षा दिलाना चाहते है।

इस प्रकार इन आँकड़ों को देखने से पता चलता है कि जसपुर नगर के मुस्लिम समाज में पहले की तुलना में शिक्षा का विकास हुआ है। जहाँ वे अपने पुत्र को स्नातक, स्नातकोत्तर एवं व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की शिक्षा दिलाने को कुछ प्राथमिकता देते हुए दिखाई दे रहें हैं वहीं स्त्री शिक्षा की ओर भी उनके कदम बढ़े हैं। जहाँ वे प्राचीन काल में बालिकाओं की शिक्षा को महत्व नहीं देते हुए प्रतीत होते थे, वँही उत्तरदाताओं का अपनी पुत्रियों को इण्टर तक की शिक्षा दिलाने का आश्वासन देना, इस समाज के विकास का एक प्रतिमान दिखाई देता है, किन्तु अभी भी इससे उच्च कक्षाओं की शिक्षा की ओर पुत्रों की तुलना में पुत्रियों को समानता न देना एक सोचनीय विषय है, और दोनों को एक समान न समझना जैसी बुराईयाँ व्याप्त दिखती हैं। इसके कारणों में वर्तमान में भी कुछ हद तक 'पर्दा प्रथा' का विद्यमान होना है। वे दूरदराज क्षेत्रों में बालिकाओं की शिक्षा के लिए भी पूर्ण रूप से तैयार नही हैं। कुछ उत्तरदाताओं का अपनी पुत्रियों को परास्नातक व व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की शिक्षा दिलाने के लिए हामी भरना उच्च शिक्षा के प्रति उनकी सकारात्मक सोच को दर्शाता है। केवल कुछ प्रतिशत ही सही, वे अपनी बालिकाओं को उच्च तथा व्यावसायिक शिक्षा दिलाने की ओर अग्रसर तो हो रहे हैं।

बच्चों को शिक्षित कराने वाले अधिकांश उत्तरदाता अपने पुत्र को अधिक शिक्षित कराना चाहते हैं। जबकि केवल कम उत्तरदाता ही अपनी पुत्री को अधिक शिक्षित कराना चाहते हैं,

जबकि कुछ उत्तरदाताओं का मत है कि वे अपने पुत्र और पुत्री दोनों को समान रूप से ही शिक्षित कराने को प्राथमिकता देंगें। जब उनसे इसका कारण पूछा गया तो उन्होंने बताया कि पुत्री तो विवाह करके अपनी ससुराल चली जायेगी तथा उसकी शिक्षा पर किया गया निवेश व्यर्थ चला जायेगा जबकि पुत्र उनको जिन्दगी भर कमाकर खिलायेगा। दूसरे, इस पुरूष प्रधान समाज में आज भी पुरूषों को प्राथमिकता देने तथा महिलाओं की शिक्षा के प्रति पर्दा–प्रथा तथा समाज में खुले रूप में ना भेजे जाने के कारण आज भी उदासीनता है। हालांकि एक चौथाई उत्तरदाताओं को दोनों को समान समझना एक सकारात्मक सोच की ओर अग्रसर होने का संकेत देता है। एक ऐसा समाज जो वर्षो से शिक्षा के प्रति अरूचि रखता हो उसका शिक्षा के प्रति पुत्र और पुत्री को समान शिक्षा दिलाना एक सकारात्मक रूख की ओर बढ़ने का संकेत देता है। चाहे वह कुछ ही प्रतिशत हो।

अधिकांश उत्तरदाता वर्तमान समय में अपने बच्चों को स्कूली शिक्षा दिलाने को प्राथमिकता देते हैं, जबकि कुछ ही उत्तरदाता अपने बच्चों के लिए दीनी (धार्मिक) शिक्षा को सही मानते हैं। जबकि न के बराबर उत्तरदाता अपने बच्चों को कोई भी शिक्षा दिलाना नही चाहते हैं। इस प्रकार अधिकांश उत्तरदाता आज के वर्तमान युग में आधुनिक स्कूली शिक्षा को अच्छा मानते हैं। उनका कहना है कि वर्तमान समय में न केवल नौकरी पाने के लिए शिक्षित होना जरूरी है, बल्कि आधुनिक शिक्षा मानव को, जीवन को आदर्श रूप में जीने योग्य बनाती है। यह मनुष्य का समग्र विकास करती है तथा उनमें विभिन्न गुणों का विकास करती है। जबकि आज भी 100 में से 25 व्यक्तियों की राय में दीनी (धार्मिक) शिक्षा ही जरूरी है। ऐसे उत्तरदाता आज भी अपनी परम्परागत जड़ों से जुड़े हुए हैं, और अपनी धार्मिक शिक्षा को ही सीखना अनिवार्य मानते हैं।

जब उनसे नगर में महिला कल्याण के लिए सुविधा के बारे में जानने का प्रयास किया गया तो अलग–अलग उत्तरदाताओं ने सिलाई केन्द्र, प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र तथा आँगनबाड़ी केन्द्रों के बारे में बताया। हालाँकि 08 उत्तरदाताओं ने इसकी जानकारी से अनभिज्ञता प्रकट की। लेकिन अधिकांश उत्तरदाताओं ने इनके प्रयोग की स्वीकार्यता को कम ही माना।

अपने बच्चों को शिक्षा दिलाने के पक्षधर 87 उत्तरदाताओं में से अधिकांश उत्तरदाता अपने बच्चों को कम्प्यूटर शिक्षा दिलाने को प्राथमिकता देते हैं जबकि कम ही उत्तरदाता कम्प्यूटर शिक्षा दिलाने के पक्षधर नहीं हैं। जसपुर नगर के मुस्लिम समाज के लोग आधुनिकता के इस दौर में शिक्षा के साथ–साथ डिजिटल क्रान्ति की महत्ता को स्वीकार कर रहे हैं और उसकी शिक्षा को आवश्यक समझ रहे हैं । वे अपने बच्चों को इस विद्या में शिक्षित कराना चाहते हैं। जबकि कुछ व्यक्ति ऐसे भी हैं जो आज भी कहते हैं कि इसकी कोई आवश्यकता नहीं है और इसकी शिक्षा पर खर्च करना व्यर्थ का काम हैं।

व्यावसायिक स्थिति

व्यावसायिक संरचना पर शिक्षा का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। शिक्षा किसी समाज की व्यावसायिक स्थिति को निर्धारित करने का महत्वपूर्ण तत्व है। जसपुर नगर के मुस्लिम समाज की शिक्षा भी उनकी व्यावसायिक स्थितियों पर प्रभाव दर्शाती हैं। जसपुर नगर के अधिकांश

मुस्लिम लोग नौकरी, दुकानदारी, मजदूरी एवं ठेकेदारी जैसे कार्यों में संलग्न मिलते हैं। सबसे अधिक लोग मजदूरी करके अपना जीवन यापन करते हैं। जब उनसे प्रश्न पूछा गया कि 'आप किस प्रकार की मजदूरी करते हैं?' तो अधिकांश उत्तरदाताओं ने बताया कि जसपुर नगर लकड़ी के व्यापार के लिए प्रसिद्ध है। अतः अधिकतर लोग लकड़ी की विभिन्न वस्तुओं (सामग्रियों) को एक स्थान से दूसरे स्थान पर हाथ के ठेलों द्वारा ढुलान करने तथा ट्रकों एवं ट्रेक्टरों में सामग्री लादने एवं उतारने का कार्य करते हैं। कुछ लोग लकड़ी के लट्ठों को छीलने एवं आरा मशीनों पर भी मजदूरी का कार्य करते हैं। जसपुर नगर का तेजी से विकास होने के कारण यहाँ पर लोग कपड़ो, किराना, कन्फेक्शनरी, बुक स्टोर, बर्तनों तथा सब्जियों जैसी कई प्रकार की दुकानदारी में संलग्न हैं। कुछ लोग नौकरी में भी संलग्न मिलते हैं, जो प्लाईवुड फैक्ट्री, ट्रक यूनियन, सीड प्लान्ट तथा ऐसे ही कई स्थानों पर प्राइवेट नौकरी करते हुए मिले जबकि कुछ लोग अध्यापक तथा पटवारी जैसी सरकारी सेवाओं में भी संलग्न दिखे। जबकि कुछ धनाढय परिवारों के लोग धन की अधिकता होने पर ठेकेदारी करते हुए दिखाई दिये। ऐसे उत्तरदाताओं का प्रतिशत हालाँकि कम ही है, जबकि कुछ व्यक्ति अन्य कार्यों जैसे मदरसों में अध्यापन, फेरी तथा अन्य छोटे–मोटे व्यवसायों में भी दिखाई दिये।

जब उनसे यह पूछा गया कि "वे इससे पहले कोई अन्य व्यवसाय करते थे" तो उनका उत्तर था कि आज के आधुनिक युग तथा जनसंख्या की अधिकता होने के फलस्वरूप नौकरी, ठेकेदारी तथा दुकानदारी जैसे व्यवसाय प्रचलित हैं जो कि पुराने समय में अधिक नहीं थे। उस समय में वे घोड़ों पर अनाज लादकर इधर–उधर बेचने का कार्य, राजगीरी, ताँगा चालन, फेरी इत्यादि छोटे–मोटे व्यवसाय करके ही अपना लालन–पालन करते थे। प्राचीन एवं आधुनिक समय के व्यवसायों में काफी अन्तर आ गया है। उस समय शिक्षा का भी अभाव था। अतः वे विभिन्न प्रकार की नौकरियों के लिए भी योग्य नहीं थे।

वर्तमान समय में आय बढ़ने के कारण तथा संतानों के भी शिक्षित होने के कारण वे स्वयं तथा अपने पुत्र–पुत्रियों को नौकरी जैसे व्यवसायों में आना तथा लाना पसन्द कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त ठेकेदारी, लकड़ी विक्रय, आरा मशीन, दुकानदारी, डेयरी तथा ट्रान्सपोर्ट जैसे व्यवसायों को अपना रहे हैं तथा इसके कारणों में वे मुख्यतः शिक्षा के विकास, आय का बढ़ना तथा जनसंख्या वृद्धि होने के कारण बाजार का बढ़ना इत्यादि को मानते हैं।

जसपुर नगर के सर्वेक्षित 100 उत्तरदाताओं में से अधिकांश उत्तरदाता वर्तमान व्यवसाय में लाभ बताते हैं। जबकि काफी कम उत्तरदाताओं का मत है कि उनके पहले के व्यवसाय में अधिक लाभ था। वर्तमान व्यवसाय में लाभ होने की बात स्वीकारने वाले उत्तरदाताओं से जब जाना गया कि इसका क्या कारण है तो उनका मत था कि वर्तमान मे जनसंख्या बढ़ने तथा विभिन्न व्यवसायों का विशेषीकरण होने, बाजार के विस्तार एवं व्यवसायों के नये–नये क्षेत्रों के खुलने से वर्तमान व्यवसाय में अधिक लाभ हो रहा है, जबकि पहले के व्यवसायों में लाभ बताने वाले उत्तरदाता कहते हैं कि पहले व्यवसायों में इतनी प्रतिस्पर्धा नहीं थी। इसलिए उन्हे अच्छा लाभ प्राप्त हो जाता था, किन्तु आज एक ही प्रकृति के व्यवसायों में अनेक लोगों के प्रवेश करने

से लाभ में गिरावट आयी है। कई बार लागत भी नहीं निकल पाती है। विशेष रूप से कृषि के प्रति उपेक्षा होने तथा मौसम में अन्तर तथा अनिश्चितता बढ़ने के कारण काफी हानि होती है। हालाँकि बाजार का विस्तार तो हुआ है, लेकिन जनसंख्या भी तीव्र गति से बढ़ी है। अतः एक ही प्रकृति की दुकानों अथवा व्यवसायों को भी हानि का सामना करना पड़ता है। विभिन्न नौकरियों में भी हजारों आवेदको के कारण शिक्षित व्यक्ति भी प्रतिस्पर्धात्मक स्थितियों से सामना करते हैं और नौकरियाँ कुछ ही लोगों को मिल पाती हैं और अधिकतर लोग बेरोजगार रह जाते हैं।

अधिकांश उत्तरदाता नौकरियों में जाना पसन्द करते हैं अर्थात् वर्तमान युग में लोग सरकारी और अच्छे वेतन वाली प्राइवेट नौकरियों में जाने को प्राथमिकता दे रहे हैं। शिक्षा के विकास के कारण इस समाज के लोग काफी संख्या में सरकारी नौकरी में आये हैं। विशेष रूप से शिक्षक की नौकरी में। हालाँकि स्वव्यवसाय करने वाले उत्तरदाताओं की संख्या भी कम नहीं हैं। जसपुर क्षेत्र लकड़ी के मामले में काफी समृद्ध है। अतः अधिकांश लोग लकड़ी के व्यवसाय में संलग्न हैं। दुकानदारी के व्यवसाय को भी कुछ उत्तरदाता अपनाए हुए हैं। जिससे ज्ञात होता है कि नगर होने तथा अधिक जनसंख्या होने के कारण यह व्यवसाय भी काफी प्रचलित है। हालाँकि धन की कमी के कारण कुछ उत्तरदाता मजदूरी, राजगीरी, नाई, फेरी इत्यादि जैसे अन्य कार्यों को भी करना पसन्द करते हैं।

आधे से भी अधिक उत्तरदाता वर्तमान में अपने पुत्र/पुत्री को नौकरी में भेजना पसन्द करते हैं। आधुनिक समय में अच्छा वेतन तथा सरकारी नौकरियों में सरलता और सुविधा तथा अल्प समय कार्य होने के कारण सभी इस ओर आकर्षित हो रहे हैं और इसमें जाने को प्राथमिकता दे रहे हैं। स्वव्यवसाय अर्थात बिजनेस करवाने वाले 30 उत्तरदाता हैं, जो ये सोचते है कि स्वव्यवसाय में काफी लाभ कमाया जा सकता है। अतः अधिक धन होने पर वे लोग स्वव्यवसायों में जाने को प्राथमिकता दे रहे हैं। जो उत्तरदाता किसी छोटे मोटे व्यवसायों को अपने पुत्र/पुत्रियों को कराना पसन्द कर रहे हैं वे ऐसे उत्तरदाता हैं जो निर्धन हैं तथा उनके पुत्र/पुत्री कम पढ़े लिखे हैं। अतः वे बड़े व्यवसायों तथा नौकरियों को नहीं करा सकते हैं।

अधिकांश उत्तरदाता अपने धन को बैंक में जमा करते हैं। बैंक में धन को जमा करने वाले उत्तरदाता अधिकांशतः सरकारी नौकरी तथा बड़े व्यवसायी वर्ग से हैं। वे बैंकों से ऋण भी लेते हैं तथा व्यवसाय में भी उनका लेन–देन बैंक से होता है, जबकि कुछ मध्यमवर्गीय लोग पोस्ट ऑफिस में भी अपने धन को जमा करके रखते हैं। ऐसे उत्तरदाताओं की संख्या कम ही है। एक बड़ा वर्ग आज भी इन सरकारी सुविधाओं का लाभ नहीं उठा पाता है। ऐसे लोग जो घर में ही अपने धन को जमा करके रखते हैं ऐसे उत्तरदाता काफी अधिक हैं। जबकि कुछ उत्तरदाता अपने सगे सम्बन्धियों, मित्रों इत्यादि के पास भी अपने धन को जमा करके रखते हैं अर्थात कुछ लोगों में अभी भी पिछड़ापन है। वे लोग शिक्षित न होने के कारण सरकारी सुविधाओं का लाभ नहीं ले पा रहे हैं।

बहुत कम उत्तरदाता अपने घर की महिलाओं को कार्य के लिए बाहर भेजने के इच्छुक हैं। जबकि एक बड़ा वर्ग कार्य इत्यादि के लिए अपने घर की महिलाओं को घर से बाहर भेजने का इच्छुक नही है। इस प्रकार ज्ञात हो जाता है कि आज भी महिलाओं की स्थिति में सुधार तो हुआ है लेकिन अपेक्षित नहीं। आँकड़ों को देखने से समझ में आ जाता है कि आश्चर्यजनक रूप से तमाम विकसित समाज के दावों के बावजूद एवं स्त्री शिक्षा के विकास के बावजूद हम यह दावा तो करते हैं कि आज लड़का एवं लड़की समान हैं। दोनों समान रूप से शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तथा समान रूप से नौकरी तथा कार्य के अवसर प्राप्त कर रहे हैं किन्तु आज भी अधिकांश उत्तरदाता पुत्र को ही अधिक महत्व दे रहे हैं। पुत्रियों को महत्व देने वाले उत्तरदाता कम ही हैं। हालाँकि एक सकारात्मक बात यह है कि 22 उत्तरदाता दोनों को समान समझते हैं जिससे ज्ञात होता है कि पूर्व समय से वर्तमान तक महिलाओं की स्थिति समाज में सुधरी है। वे पुरूषों के समान सारे अधिकार प्राप्त कर रही हैं। इसमें विभिन्न सामाजिक तथा राजनैतिक संस्थाओं का तो योगदान है ही, साथ ही उनकी शिक्षा में प्रगति भी एक आधार प्रदान करती है।

आँकड़ों को देखकर पता चलता है कि जसपुर नगर का मुस्लिम समाज आज भी भगवान की इच्छा को ही सर्वोपरि मानता है। साथ ही अत्यन्त भाग्यवादी है। 70 उत्तरदाता भगवान की इच्छा को ही अपने जीवन का आधार मानते हैं जबकि कम उत्तरदाता हैं जो भाग्य को भी काफी महत्वपूर्ण मानते हैं।

निष्कर्ष

इस प्रकार कहा जा सकता है कि प्रस्तुत अध्ययन से न केवल मुस्लिम समाज जो कि देश का दूसरा सबसे बड़ा धार्मिक समुदाय है, की दशा और दिशा को समझने का अवसर मिला बल्कि उनके रूझानों, आवश्यकताओं, अपेक्षाओं और आकांक्षाओं को समझने का अवसर प्राप्त हुआ। एक ऐसा समुदाय जो अधिकांश रूप से वर्षों से अपनी परम्परागत शिक्षा से चिपका हुआ था, उसके नवीन शिक्षा की ओर उन्मुख होने के कारणो को जानने का अवसर मिला। शैक्षिक परिवर्तन का प्रभाव उनके आर्थिक और राजनैतिक जीवन में भी देखने को मिलता है। इस समुदाय के नवीन शिक्षा ग्रहण करने से उनकी प्रवृत्ति में सकारात्मक बदलाव आये हैं। अन्य समुदायों, धर्मों एवं भाषाओं के प्रति उनके दृष्टिकोण में सकारात्मक एवं सहिष्णु परिवर्तन दृष्टिगोचर हुए हैं। साथ ही महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप उनकी सामाजिक एवं पारिवारिक स्थिति में भी सकारात्मक बदलाव आये हैं।

जसपुर नगर के मुस्लिमों का दृष्टिकोण पहले नौकरियों के प्रति उदासीन था। वे केवल स्वरोजगार करना पसन्द करते थे। वर्तमान में वे नौकरियों के प्रति उत्साहित हैं। अब नौकरी करने को अच्छा तथा उच्च सामाजिक स्थिति वाला पेशा माना जाता हैं। मदरसों में भी आधुनिक शिक्षा का प्रवेश हो गया है। अंग्रेजी शिक्षा भी बोलचाल एवं सामान्य प्रचलन में दिखाई देने लगी है। उनकी धार्मिक एकाग्रता और कटटरवादी सोच में भी तीव्र बदलाव आये हैं।

इस प्रकार एक ऐसा वर्ग जो शैक्षिक रूप से पिछड़ा माना जाता था। वह वर्तमान में बदलाव के दौर से गुजर कर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। जसपुर के मुस्लिमों को पूर्ण रूप से

विकसित करने के लिए सरकारों को कुछ प्रयास और करने होंगें, जिससे वह विकसित होकर समाज की मुख्यधारा में मिल सकें एवं समाज में अपना सकारात्मक योगदान दे सकें।

सन्दर्भ ग्रंथ

1– अर्नोल्ड, डेविड (2004), *"दी न्यू केम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इण्डियाः साइन्स, टैक्नोलोजी एंड मेडिसिन इन कोलोनियल इंडिया"* कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, आइ0 आइ0 एस0 बी0 एन0, 521– 56319 – **4**

2–ब्लेकवेल, फिट्ज (2004), *"इंडियाः ए ग्लोबल स्टडीज हेण्डबुक"*, ए0 बी0 सी0 सी0 एल0 आई0 ओ0, आइ0 एस0 बी0 एन0, 1– 57607 – 343–3

3–एलिस, केटरियोना, *''एजुकेशन फॉरः रीसेसिंग दी हिस्टोरियोग्राफी ऑफ एजुकेशन इन कोलोनियल इंडिया"* हिस्ट्री कम्पास (मार्च 2009), 72, पी0पी0 **363– 375**

4–कुमार, दीपक (2003), *"इंडिया", दी कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ साइन्स* (7)– ऐटीन्थ सेन्चुरी साइन्स, ऐडिटेड बाई राय पोर्टर, पेज **669–687**, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

5–कुमार दीपक (1984), *"साइन्स इन हायर ऐजुकेशनः ए स्टडी इन विक्टोरियन इंडिया'' इंडियन जनरल ऑफ हिस्ट्री ऑफ साइन्स*, 19(3),253–260, इन्डियन नेशनल साइन्स एकेडमी।

6– प्रभु, जोसेफ (2006), *"ऐजुकेशनल इन्स्टीट्यूशन्स एंड फिलोसोफीज, ट्रेडिशनल एण्ड मोर्डन"* एन्साइक्लोपीडिया आफ इंडिया (वोल्यूम 2), ऐडिटेड बाई स्टेनले वोलपार्ट, पेज **23–28**, थोमसन गेल, आई0 एस0 बी0 एन0, 0–684–31351–0,

7– रामसन, एस0ए0 (2006), *"वूमन्स ऐजुकेशन", ऐन्साइक्लोपीडिया ऑफ इण्डिया* वोल्यूम 4, ऐडिटेड बाई स्टेनले / वोलपर्ट, पेज 235–239, थोमसन गेल, आई0एस0बी0एन0 0–684 / 31353–7 स्कार्फ, हार्टमेट (2002), "ऐजुकेशन इन ऐन्सियेन्ट इंडिया" ब्रिल एकेडेमिक पब्लिशर्स, आई0एस0बी0एन0 978–90– 04– 12556–8

8– सेन, एस0 एन0 (1988), *"ऐजुकेशन इन अन्सियेन्ट एण्ड मेडिवियल इण्डिया"* इण्डियन नेशनल साइन्स एकेडमी।

9– सिंह, आशीष (2010), *"इनइक्यूअलिटी ऑफ अपोर्चुनिटी इन इण्डिया"* एन0पी0आर0 ए0, पेपर 32971, यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी ऑफ म्यूनिख, जर्मनी।

10– सबिना अलकिरे एण्ड सुमन सेठ (2012), *"सलेक्टिंग ए टार्गेटिंग मेथड टू आइडेन्टिटी वी0पी0एल0 हाउस होल्ड इन इण्डिया"* ओ0पी0एल0आई0 वर्किंग पेपर्स, ऑफिस क्वीन एलिजाबैथ हाउस यूनिवर्सिटी ऑफ आक्सफोर्ड।

11– सोनिया भालोतरा एण्ड क्रिस्टाइन वेलेन्टे एण्ड आर्थर वेन सोयस्ट (2008), *"रीलीजन एण्ड चाइल्डहुड डेथ इन इण्डिया"*। दी सेन्टर फॉर मार्केट एण्ड पब्लिक आर्गेनाइजेशन 08 / 185, डिपार्टमेन्ट ऑफ इकोनोमिक्स, यूनिवर्सिटी ऑफ ब्रिस्टोल, यू0के0।

12– असदुल्लाह, नियाज एण्ड कममपति, उमा एण्ड लोपेज बू फ्लोरेन्सिया, (2012), *" सोशल डिविजन्स इन स्कूल पार्टिसिपेशन एण्ड अटेनमेन्ट इन इण्डियाः 1983–2004"* आइ जेड ए डिस्कशन पेपर्स 6329, इन्स्टीट्यूट फॉर दी स्टडी ऑफ लेबर (आई जेड ए)।

13– भालोतरा, एस0 एण्ड वेलेन्टी, सी0 एण्ड सोयस्ट, ए0एच0ओ0 वान (2009), *"द पजल ऑफ मुस्लिम एडवान्टेज इन चाइल्ड सर्वाइवल इन इण्डिया",* डिस्कशन पेपर 2009–13, टिलबर्ग यूनिवर्सिटी, सेन्टर ऑफ इकोनोमिक रिसर्च।

14– अशरफ के0 एम0 *"लाइफ एण्ड कण्डीशन ऑफ द पीपुल ऑफ हिन्दुस्तान"* ओरियन्टल पब्लिशर्स रानी झाँसी रोड़, न्यू देहली, 1959,

15– ईपिस्टन, एस0 *"इकोनोमिक डेवेलपमेन्ट एण्ड सोशल चेन्ज इन साउथ इण्डिया",* मैनचेस्टर यूनिवर्सिटी प्रेस, 1962

16– ऐलमेन, इरमा एण्ड जी0, डाल्टन, *"ए फेक्टर ऐनालिसिस ऑफ मोर्डनाइजेशन ऑफ विलेज इण्डिया"* इन डाल्टन्स (एड) इकोनोमिक डेवलेपमेन्ट एंड सोशल चेंज 1971

17– इरफान हबीब, *"मर्चेन्ट कम्यूनिटीज इन प्री–कोलोनियल इंडिया",* ऐडिटेड बाई जेम्स डी0 ट्रेसी, पेपर प्रेजेन्टेड इन दी कान्फ्रेंस ऑन द 'राइज ऑफ मर्चेन्ट एम्पायर्स, यूनिवर्सिटी ऑफ मिनिसोटा, 9–11 अक्टूबर, 1987, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1990

18– चक्रवर्ती, हरिपद, *"ट्रेड एण्ड कामर्स ऑफ अन्सियेंट इंडिया (सी0 200 बी0 सी0–650 ए0डी0)"* संस्कृत पुस्तक भण्डार कलकत्ता, 1966

19– छिछरोव, ए0 आई0 *"इण्डिया इकोनोमिक डेवेलपमेन्ट इन 16–18 सेन्चुरी"* नौका पब्लिकेशन, मास्को, 1971

20– टेवर्नियर, *"ट्रेवल्स इन इण्डिया"* वोल्यूम–1, ट्रान्सलेटेड बी0 बाल मैकमिलन, ओरियन्टल बुक, लन्दन, 1889,

21– डाल्टन, जी0, *"इकोमोनिक डेवलपमेन्ट एण्ड सोशल चेन्ज"* न्यूयार्क, 1971

22– नाष, एम0 *"मोर्डनाइजेशन",* कल्चरल मीनिंग", दी वाइडनिंग गेप बिटवीन द इन्टेलेक्चुअल्स एण्ड द प्रोसेस इन नाश एड, 'एस्सेज आन इकोनोमिक एण्ड कलचरल चेन्ज, शिकागो, 1987, पृ0 **16–28**